अंतिम निष्कर्ष है, जो याज्ञवल्क्य ऋषि ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को बताया था, "कोई भी पति अपनी पत्नी से पत्नी की खुशी के लिए प्यार नहीं करता, लेकिन अपनी आत्मा को खुशी के लिए प्यार करता है। कोई भी पत्नी पति की खुशी के लिए अपने पति से प्यार नहीं करती, लेकिन अपनी आत्मा को खुशी के लिए प्यार करती है। कोई पिता अपनी संतान की खुशी के लिए अपनी संतान से प्यार नही करता, लेकिन अपनी आत्मा से खुशी पाने के लिए प्यार करता है। कोई संतान अपने पिता से पिता की खुशी के लिए नहीं, बल्कि अपनी आत्मा से खुशी पाने के लिए प्यार करती है। कोई भी माॅ संतान की खुशी के लिए अपनी संतान से प्यार नहीं करती, लेकिन खुद की आत्मा को खुशी लाने के लिए प्यार करती है। कोई भी संतान अपनी माँ को माँ की ख़ुशी से प्यार नहीं करती, बल्कि अपनी आत्मा को ख़ुशी दिलाना चाहती है। कोई भी दोस्त अपने दोस्त की ख़ुशी के लिए दोस्त से प्यार नहीं करता, बल्कि अपनी ख़ुशी पाने के लिए प्यार करता है। संक्षेप में, कोई किसी और की खुशी के लिए किसी और से प्यार नहीं करता, लेकिन खुद की आत्मा की खुशी के लिए प्यार करता है। मैत्रेयी! इसको सुनो। इसका मनन करो। इसको हमेशा याद रखो।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

प्यार प्रेमास्पद के सुख के लिए होता है। ये हमने सिद्ध किया है कि यहा तो सब अपना सुख चाहते है। प्यार ईश्वरीय क्षेत्र में ही संभव है। ईश्वरीय क्षेत्र में अनंत सुख होता है। इसलिए भगवान और महापुरूष (संत) ही केवल औरों के सुख की सोच सकते है। अतएव भगवान और महापुरूष ही केवल औरों से प्यार करते है।